# VOICES OF NATIONAL CONSCIOUSNESS IN BHARATENDU ERA POETRY

**Dr. (Smt.) Ranjana Kulshreshtha**

*Associate Professor and HOD (Hindi), Th. Biri Singh College, Tundla, Firozabad*

# भारतेन्दु युगीन कविता में राष्ट्रीय चेतना के स्वर

**डॉ० (श्रीमती) रंजना कुलश्रेष्ठ**

एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) ठा० बीरी सिंह महाविद्यालय टूण्डला फिरोजाबाद

---

राष्ट्र प्रेम की वह अमृत है जिसे पीकर ही कोई राष्ट्र समृद्ध होता है और जब-जब इस जीवन रस का अभाव हो जाता है तब-तब राष्ट्र के पतन हुए हैं। अपने यहाँ वेदों में भी ऋषि मातृभूमि की कल्पना करता हुआ अपने को पृथ्वी पुत्र मानता है और एक-एक इंच भूमि की रक्षा में मर मिट जाने का दृढ़ संकल्प व्यक्त करता है। उसी राष्ट्र प्रेम की धारा में आवाहन करने वाले राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की वाणी से निःसृत ये भाव पुंज हमारे सम्मुख आये—

"व्यर्थ ही जन्मा जगाया देश को, जिसने नही,, तथा एक अन्यस्थल पर —

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर पशु निदा है और मृतक समान है।।

इस राष्ट्र प्रेम से प्रेरित होकर जब कवि कुछ काव्य कृतियों का सृजन करते है तब वह राष्ट्रीय भाव-लोक में पदार्पण करते है। वह राष्ट्र प्रेम बहुत व्यापक है उसकी परिधि का आयाम भी अनेक रुपों में होता है। देश प्रेम के अतिरिक्त प्राचीन गौरव की स्मृति और अपने अतीत कालीन गौरवमम परम्पराओं के प्रति मोंग्ध्य व वर्तमान काल में पतन प्राप्त देश की स्थिति पर क्षोम, राष्ट्र भक्ति, राष्ट्रीय जागरण का उन्मेष इत्यादि इसी राष्ट्रीय भावना के परिवेश के बिन्दु हैं।

यदि हिन्दी काव्य और राष्ट्रीय चेतना पर विचार करें तों 'राष्ट्र' केवल प्राकृतिक सीमाओं से घिरी भौतिक ईकाई मात्र नहीं हो सकता। राष्ट्र के लिए एक भूमि खण्ड की आवश्यकता होती है। दूसरे उसमें निवास करने वाला मानव समुदाय हो। इस भूमि एवं जनक माता एवं पुत्र जैसा सम्बन्ध होना अनिवार्य तत्व प्रतीत होता है जिसके आधार पर राष्ट्र की परिकल्पना की जाती है।

राष्ट्रीय काव्य सृजन के पीछे प्रष्ठभूमि के रुप में कार्य करने वाली सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार करने से ज्ञात होता है। कि देश में 1857 में होने वाले प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम उसकी प्रतिक्रियाऐं एवं परिणाम जब स्पष्ट होने लगे तब कुछ विदेशी इतिहासकरों ने इसे विद्रोह की संज्ञा प्रदान की। जनता के इस प्रथम क्रान्ति के बलिदानियों की गाथाऐं याद थी, उन्हें इस आन्दोलन में अस्था थी और प्रथम बार सम्पूर्ण देश में एकता के भाव का उदय हुआ।

अंग्रेजों के दमन चक्र से यह और भी तीव्र रुप में प्रकट हुआ इसके अतिरिक्त जहाँ एक ओर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से जिस अंग्रेजयित का संचार हो रहा था। वहीं दूसरी ओर भारतीय परम्पराओं के प्रेमी भारतीय जनमानस के मन में उसकी प्रतिक्रिया हुई और राष्ट्रीय चेतना के नवीन स्वर मुखरित होने लगे।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत बनकर भारतेन्दु हरीश चन्द्र ने जहाँ एक ओर राजभक्ति परक रचनाऐ लिखकर तत्कालीन अंग्रेज सरकार के प्रति अपनी वफादारी दिखाई है वहीं दूसरी और हिन्दी कविता को देश भक्ति और राष्ट्रीय चेतना से जोड़कर आधुनिकता का परिचय दिया है। भारतेन्दु जी नये युग नये भारत के संदेश वाहक थे। राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद करके बाबू हरीश चन्द्र ने दास्ता जन्य प्रमाद आलस्य और निद्रा में सोये हुए भारतीय जनों को जगा दिया। इस प्रकार हिन्दी गद्य का बीजारोपण एवं हिन्दी कविता को देश प्रेम और राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने का महान कार्य भारतेन्दु जी ने ही किया। इसी समय राजा राममोहन राय ने ब्रहम समाज के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण का मंत्र फूंका। दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना एवं प्रचार करके सामाजिक उत्थान का शंखनाद किया इस राष्ट्रीय चेतना का प्रादुर्भाव हिन्दी कविता में भारतेन्दु युग से ही हआ।

भारतेन्दु अपने समय की बेमिसाल अभिव्यक्ति थे हिन्दी जगत में शायद ही कोई ऐसा रचनाकार होगा जिसने अपने युग की चेतना को इतनी सशक्त वाणी दी। भारतेन्दु जी का व्यक्तित्व

लगभग उस उगते हुए सूर्य की भाँति है जो शीत से ठिठरते कोहरे, भरे भोर में तह परतह ढके, बादलों को चिरता हुआ निकलता है, जिससे धरती अपना अँधेरा भी पौछती है जिससे हजारों धरती पुत्र जानलेवा शीत से जूझते और अँधेरा में लड़ने के लिए कमर करने क् लिए समर्थ होते है, भारतेन्दु के आविभवि के समय देश का राजनीतिक क्षितिज कुछ ऐसा ही था। अधिक धूँधलका और सामाजिक रुदि, अंधता की छटपटाहट का परिणाम था भारतेन्दु और उनका प्रभामंडल । जिसने उस व्यग्रता को वाणी दी थी, तत्कलीन राजनीतिक समाज और राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया था और जातीय स्वर पर घर कर गये पराधीनता बोध को झकझोरा था। इसमें कोई संदेह नहीं कि हिन्दी कविता में भारतेन्दु युग वस्त्वुतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का एक महत्वपूर्ण युग है। हिन्दी में राष्ट्रीय कविता का वास्तव प्रारम्भ भारतेन्दु जी से ही स्वीकार किया जाना चाहिए।

जब चारों और अंधकार ही अंधकार था दरबार के विषाक्त वातारवरण में बेचारी कविता को बहू, बेटियों के नग्न सौंदर्य वर्णन की बेहयाई मात्र बना रखा था। तब देश प्रेमी भारतेन्दु ने कविता को राष्ट्रीयता और देशभक्ति से जोड़ा। रीतिकालीन कविता की श्रृगारिकता को तराशते हुए काव्य कला को छंद कौशल एव भक्ति पूर्ण सांस्कृतिक रागात्मकता से सम्बन्धित किया। परिवार समाज और देश की क्रमशः बढ़ती हूई हीनावस्था के चित्रण में कवि की वाणी अनायास करुणा से भींग ऊठी

रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई,
हा हा भारत दुर्दशा ना देखी जाई।

कविता को जन प्रिय बनाने के लिए भारतेन्दु जी ने सामन्ती कवि दरबारों से अलग कवि गोष्ठियों का स्वरुप आयोजित किया जिसमें कविता प्रशंसा पाठ की सीमाओं का अतिक्रमण कर साहित्यिक संवाद का माध्यम बनी। भारतेन्दु जी ने अपने नाटकों में कई स्थानों पर काव्यात्मक पंक्तियों का प्रयोग कर राष्ट्रीय चेतना की भावना का मुखरित किया है। 'नील देवी' नाटक में वध्जातीय दैन्य पर आँसू बहाते हुए देश के लिए ईश्वर से पुकार करते है—

"कहाँ करुणा निधि केशव सोय,
जागत नेक न जदपि बहुत विधि भारत वासी रोय।[1]

इसी प्रकार 'विजय बल्लरी' नामक रचना में ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय सेनाओं द्वारा काबुल विजय का वर्णन है। इस काव्य में राष्ट्रीय प्रेम की भावना देश भक्ति की भावना का भाव प्रदर्शित करते हुए कहते है कि इससे भारत वासियों को कोई लाभ नहीं होगा बल्कि परेशानी ही होगी। भारतीय जनता युद्ध से पहले की क्या कम पीड़ित है वह कहते है

काबुल से इनको कहाँ हिय हरख की आस
ये तो निज धन नाससौ, रन सो और उदास
ये तो समझत व्यर्थसब, यह रोटी उत्पात
भारत कोण विनास को, हिय अति ही अकुलाता [2]

भारतेन्दु जी द्वारा प्रकट की गयी राजभक्ति में देश भक्ति बडी ही सूझबूझ और बारीकी से पिरोई गयी है। राष्ट्रीय भावना की रचना के प्रारम्भ में उन्होने यह भी कहा है कि नाटक, उपदेश समाचार—पत्र आदि को स्वतन्त्रता होनी चाहिए। वह कहते है —

नाटक आरु अपदेश पुनि समाचार के पत्र
कारण मुक्त भय कहाँ जो आनन्द आति अत्र [3]

इसी प्रकार भारतेन्दु जी अंग्रेजी सरकार के प्रभाव पर व्यंग्य करते हुए मुकरियों के माध्यम से व्यक्त करते है—

"सब गुरुजन को बुरौ बतावै
अपनी खिचड़ी अलग पकावै
भीतर तत्व ना झूठी तेजी
क्यों सखि सज्जन नहिं अंग्रेजी,,

इसी प्रकार भारतेन्दु जी काव्य के माध्यम से भारतीयों को उनकी कमी को दिखाते हुए उन्हे यथार्थ में लाने की भी कोशिश करते है और कहते है —

डूबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागे।
आलस दव सहि दहन हेतु चहुँ दिसिसों लागो।

महामढता वायु वंढवत तेहि अनुरागो ।
कृपा दृष्टि की दृष्टि बुझावत आलस व्यागो।
अपुनो अपुनाओ जानिके करहु कृपा गिरिवर धरण।
जागो बलि भेहि नाथ अब देहु दौन हिन्दुन सरन। [4]

इस छन्द में भारतीय उत्थान और देश उत्थान की मार्मिक भावनाऐं भरी हुई हैं। भारतेन्दु जी देश के अतीत और आधुनिक गतिवधियों के विवरण प्रस्तुत करते हुए अपने आराध्य देव का सहृदय होने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके साथ ही भारतेन्दु जी अपने देश के अतीत की ओर देखने लगते हैं कि एक समय ऐसा था। जब हमारे इस भारतवर्ष में विक्रम, भोज, राम, बलि, कर्ण, आदि के कृतित्व का स्मरण करते अपने अतीत की गौरवपूर्ण परम्परा पर गर्व करते हैं। वहीं पर क्षत्रियों की शूरवीरता का अभाव महसूस कर उनकी दुःख की अभिव्यक्ति भी है। जहाँ कवि एक ओर अपने भारत की गौरव पूर्ण परम्परा की ओर देखकर सुख की अनुभूति करता है वहीं क्षत्रियों की शूरवीरता का अभाव महसूस करता हुआ ईश्वर से प्रार्थना करता है --

जागो अब तो खल-बल-दलन रक्षहु अपुनो आर्यमग,
सब विधिनासी भारत प्रजा कहूँ न रहयों अबलम्ब
अब जागो-2 करुणायतन फेर जागिही नाथ कब [5]

इस प्रकार हम देखते है कि भारतेन्दु जी ने हिन्दी कविता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करते है और वह भारतीय जनता को ललकारते हुए कहते है—

" क्यों बहरावत झूठ मोहि और बढ़ावत सोग
जब भारत में नाहि वे रहे वीर जे लोग
जो भारत जग में रहयों सबसे उत्तम देश
ताही भारत में रहयो अब नहिं सुख कौलेश"[6]

वह राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करते हुए अपने देश की भाषा की भी उन्नति पर बल देते है

निजभाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निजभाषा ज्ञान के मिटे ना हिय को शूल

इसी प्रकार—विविध कला शिक्षा अमित ज्ञान, अनेक प्रकार, सब देसन से ले करहु भाषा माहि प्रचार
इसी प्रकार— इक भाषा एक जीव, इकमति सब घर के लोग, तबै घनत है सबन सो मिटत मूढता सोग [7]

भारतेन्दु युगीन कवियों ने भारतीय इतिहास गौरवमयी पृष्ठों की अनेक बार याद दिलाई। उनकी राष्ट्रीय भावना यहीं तक सीमित नही रही बल्कि उन्होंने अंग्रजों की विचारधारा और उनकी देशभक्ति पूर्ण कविताओं से प्रेरणा ली। जिसका फल यह हुआ कि वह क्षेत्रीयता से उपर उठकर सम्पूर्ण राष्ट्र की नब्ज टटोलने लगे। 'हमारो भारत उत्तम देश' (राधाचरण गोस्वामी जी) धन्यपूर्ण भारत सब रत्ननि की उपजावनि (प्रेमधन) आदि की काव्यपंक्तियों ने भी जनमानस में राष्ट्रीय चेतना के बीज बपन का कार्य किया। देश भक्ति की जो भावना बाद में मैथिली शरण गुप्त जी की 'भारत भारती' में लक्षित हुई उसकी प्रेरणा भूमि भारतेन्दु प्रताप नारायण मिश्र राधा कृष्णदास आदि की रचनाऐ थी —भारतेन्दु जी ने देश की जनता में जागरण का भाव उत्पन्न किया उन्होने देश भक्ति पर आधारित काव्य रचना की, उदबोधन परक भाषण दिया करते थे, जनता को प्रभावित करने के लिए नाटक लिखते और खेलते थे, इन सभी में राष्ट्रीयता की भावना दृष्टि गोचर होती है और "डूबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागो" जैसी पंक्तियों के द्वारा राष्ट्रीय चेतना और देश भक्ति को समरसता प्रदान की है। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि भारत में हर प्रकार की सुख समृद्धि है। भारतेन्दु जी वास्तव में राष्ट्रीयता और आधुनिकता के पोषक थे। कविता के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान भुलाया नहीं जा सकता है।

**संदर्भ ग्रन्थः-**

1. भारतेन्दु ग्रन्थावली- ब्रजरत्नदास, तीसरा भाग पृ० 935-938
2. भारतेन्दु समग्र—हेमन्त शर्मा छन्द 25-26 पृ० 257
3. भारतेन्दु ग्रंथावली—ब्रजरत्न दास, विजय बल्लरी पृ० 793
4. 1874 के हरिशचन्द्र चन्द्रिका में प्रकाशित
5. प्रबोधनी अगस्त, 1874 पके हरिशचन्द्र चन्द्रिका में प्रकाशित छन्द 19-21
6. भारतेन्दु ग्रंथावली—ब्रजरत्न दास पृ० 802-803
7. राष्ट्रीयता औऱ भारतेन्दु हरिशचन्द्र—डॉ० आरिफ नसीर पृ० 221

## REFERENCES

1. Bhartendu Granthawali, Brajratnadas, Third Part, pg 935-938
2. Bhartendu Samagra, Hemant Sharma, Verse 25-26, pg 257
3. Bhartendu Granthawali, Brajratnadas, Vijay Ballari, pg 793
4. Published in Harishchandra Chandrika in 1874
5. Prabodhini August, Published in Harishchandra Chandrika in 1874, Verse 19-21
6. Bhartendu Granthawali, Brajratnadas, pg 802-803
7. Rashtriyata Aur Bhartendu Harishchandra, Dr Arif Naseer, pg 221